

**2. चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,  
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो ।**

अर्थ:— लोक में चार उत्तम हैं- 1. अरिहंत उत्तम हैं, 2. सिद्ध उत्तम है, 3. साधु उत्तम हैं, 4. केवली-प्रणीत जिन-धर्म उत्तम है ।

**3. चत्तारि-सरणं पवज्जामि-अरिहंते सरणं पवज्जामि,  
सिद्धे सरणं पवज्जामि,  
साहू सरणं पवज्जामि,  
केवलि-पण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ।**

अर्थ:— मैं चार की शरण ग्रहण करता हूँ। 1. अरिहंतों की शरण ग्रहण करता हूँ। 2. सिद्धों की शरण ग्रहण करता हूँ। 3. साधुओं की शरण ग्रहण करता हूँ। 4. केवलीप्रणीत जिन-धर्म की शरण ग्रहण करता हूँ।

**चार शरण दुख-हरण जगत् में, और न शरण कोई होगा ।  
जो भव्य प्राणी करे आचरण, उसका अजर अमर पद होगा ॥**

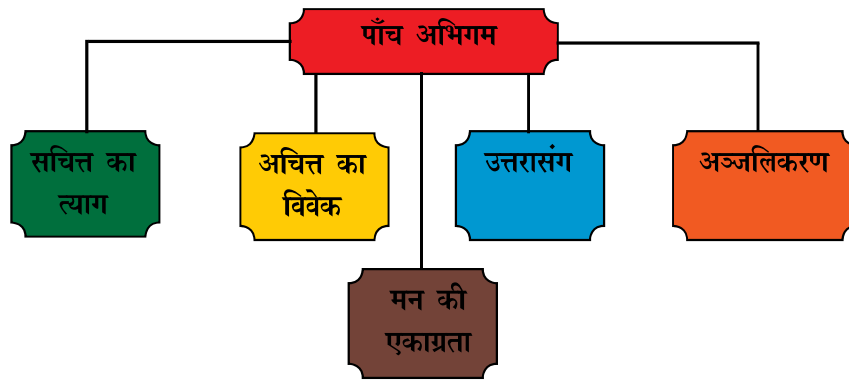
**ज्ञान वृद्धि के उपाय**

बच्चों अगर आपको अपने ज्ञान (Knowledge) को बढ़ाना है तो निम्न लिखित बातों का पालन करने से आपका ज्ञान बढ़ जाएगा:—

1. परिश्रम (Hard work) करने से
2. नींद (Sleep) कम करने से
3. भूख से कम खाकर
4. मौन (Silent) रह कर
5. ज्ञानी के पास अभ्यास करने से
6. गुरु की विनय करने से
7. ससार के प्रति वैराग्य के साथ ज्ञान सिखने से
8. सीखे हुए ज्ञान का परावर्तन (Revision) करने से
9. पाँचों इन्द्रियों (Senses) को वश में करने से
10. बह्वचर्य (Celibacy) का पालन करने से
11. कपट रहित तप करने से



## श्रावक के पाँच अभिगम



भगवान के समवसरण में या साधु-साध्वी के पास उपाश्रय, स्थानक आदि में जाने से पहले हमें जिन नियमों का पालन करना चाहिए, उन्हें हम 'अभिगम' कहते हैं। अभिगम पाँच तरह के होते हैं।

1. **सचित्त का त्याग:** देव, गुरु के समीप जाते समय इलायची, दाख, बादाम, पान, फल फूल, बीज, अनाज, दातुन, शाक आदि सचित्त वनस्पति, कच्चा पानी, नमक, लालटेन, चालू टार्च आदि साथ नहीं ले जाना।
2. **अचित्त का विवेक:** दर्प-सूचक (अभिमान-सूचक) वस्तुएं जैसे छत्र, चामर, जूते, लाठी, वाहन, शस्त्र आदि एक तरफ रखकर एवं वस्त्र व्यवस्थित कर देव-गुरु को वन्दना करना।
3. **उत्तरासंग:** मुंहपत्ती या रुमाल मुंह के ऊपर रखकर गुरुदेवों से वार्तालाप करना या प्रवचन सुनना। देव-गुरु के समक्ष खुले मुंह से नहीं बोला जाता है।
4. **अंजलिकरण:** जहां से देव, गुरु दिखाई दें वहीं से अंजलि (जोड़े हुए दोनों हाथ) मस्तक से लगाकर विनय-पूर्वक वन्दना करना।
5. **मन की एकाग्रता:** गृहकार्य के प्रपंच या पापकार्यों से मन हटाकर, जो कुछ देव-गुरु फरमाते हैं, उस तरफ एकाग्रता रखकर सुनना और देव, गुरु में श्रद्धा रखना।

## शाकाहार—एक सर्वोत्तम आहार



भ. महावीर ने उपदेश दिया है कि हर जीव जीना चाहता है, मरना कोई नहीं चाहता है। जैसे हम जीना चाहते हैं वैसे ही हर जीव जीना चाहता है। अतः हमें किसी जीव को मारने का कोई हक नहीं है। किसी की हिंसा करने का हक (Right) नहीं है।

भोजन के बिना जीव बहुत दिन तक जीवित नहीं रह सकता। खाने की यह आवश्यकता सभी प्रणियों में पायी जाती है चाहे वो मनुष्य हो, जानवर हो, कीट पतंगे हों यहाँ तक कि पेड़ पौधों को भी प्रकृति ने खाने की कोई न कोई प्रक्रिया प्रदान की है।

हर जीव के भोजन के अनुरूप प्रकृति ने उस जीव के शरीर की संरचना बनायी है। हर जीव का भोजन निर्धारित है और हर जीव अपने निर्धारित भोजन के अलावा कुछ और नहीं खाता है। भोजन का निर्धारण भी प्रकृति के नियम के अंतर्गत ही है। उदाहरण के रूप में समझें तो अगर गाय का खाना घास फूस खाना है तो शेर का खाना माँसाहार है। शेर के शरीर की संरचना प्रकृति ने शिकार करने और माँस को खाने और पचाने के लिए बनायी है। शेर घास फूस नहीं खा सकता चूँकि उसका शरीर घास फूस को पचा नहीं सकता। ठीक उसी प्रकार गाय के शरीर की संरचना भी घास फूस पचाने के हिसाब से ही बनी है। गाय कभी भी माँसाहार नहीं कर सकती।

प्रकृति में सब जीव जलवायु के अनुरूप जगहों पर पलते बढ़ते हैं। जैसे ठंडे इलाकों में पाए जाने वाले जानवर, पेड़, पौधे गरम इलाकों में नहीं पाए जाते हैं और गर्म या सम-जलवायु वाले जीव ठंडे प्रदेशों में रह नहीं सकते। प्रकृति ने हर जलवायु और वातावरण के अनुरूप जीव जंतुओं की संरचना बनायी है और उसी संरचना के अनुरूप उनका भोजन निर्धारित किया है।

मनुष्य एक अकेला ऐसा जीव है जो संसार के हर वातावरण, हर प्रकार की जलवायु में पाया जाता है। वो बेहद ठंडे इलाकों में भी रहता है और गर्म रेगिस्तानी इलाकों में भी रह सकता है। मनुष्य की हर जलवायु में रह सकने की क्षमता के कारण ही मनुष्य के भोजन में इतनी विविधता देखी और पायी जाती है। इसी लिए मनुष्य माँसाहारी भी है और शाकाहारी भी।

वातावरण और जलवायु के अनुरूप ही मनुष्य का आहार विहार और विचार का निर्धारण हुआ। साथ ही उस आहार-विहार के अनुरूप ही मनुष्य के शरीर की



संरचना में भी प्रकृति ने कुछ हद तक परिवर्तन किए। जैसे कि ऊँचे पहाड़ों में रहने वाले इंसान के Blood में हीमोग्लोबिन की मात्रा मैदानी इलाकों में रहने वाले मनुष्य से ज्यादा पायी जाती है। जिन इलाकों में सारे साल खेती बागवानी हो सकती है वहाँ प्रकृति ने एक पूरी खाद्य शृंखला की संरचना की है। इस खाद्य शृंखला में शाकाहारी जीव घास फूल पत्ती पर अपना जीवन निर्वाह करते हैं और माँसाहारी जानवर इन शाकाहारी जीवों के शिकार और भक्षण के द्वारा जीवन यापन करते हैं।

इस खाद्य शृंखला का उद्देश्य प्रकृति द्वारा एक ऐसा संतुलन स्थापित करना है जिसमें जीव की आयु के अनुरूप उसकी जनसंख्या पर नियंत्रण रखना है। जिस के कारण प्रकृति में माँसाहारी जीवों की जनसंख्या शाकाहारी जीवों की तुलना में बहुत कम होती है।

साथ ही एक बात और गौर करने योग्य है कि माँसाहारी जानवर शाकाहारी जीवों की तुलना में कम बार भोजन करते हैं।

एक जंगली शेर को 4 या 5 दिन में ही एक बार शिकार मिल पाता है और वो औसतन 4-5 दिन में एक बार भोजन करता है। शिकार के अभाव में एक शेर 14 दिन तक बिना खाए रह सकता है। वहीं शाकाहारी जीव को निरंतर खाने की जरूरत रहती है। एक शाकाहारी जानवर औसतन दिन में 3-4 बार खाना खाता है।

ऐसा इसलिए हो पाता है क्योंकि माँस को पचने में बहुत ज्यादा समय लगता है और माँसाहार से मिलने वाली ऊर्जा मुख्यतः चर्बी होने के कारण माँसाहारी जीव के पाचन तंत्र में लगातार भोजन संरक्षण और ऊर्जा क्षय का चक्र चलता रहता है। शाकाहार को पचने में बहुत कम समय लगता है इसलिए शाकाहारी जीव को जल्दी-जल्दी खाने की जरूरत हो जाती है।

मनुष्य का आहार भी मुख्यतः शाकाहार होना चाहिए क्योंकि मनुष्य के शरीर की संरचना, उसका पाचन तंत्र, भोजन के जल्दी पाचन और अपच का मल त्याग के लिए बना है। मनुष्य के शरीर में अपच भोजन संग्रह हो ही नहीं सकता। मनुष्य की आँतों की संरचना भोजन को जल्दी पचाने के अनुरूप ही बनी है। जब कि माँसाहार भोजन को पचने के लिए ज्यादा समय लगता है। प्रकृति ने मनुष्य को शिकारी के गुण नहीं दिए हैं। मनुष्य शरीर से शिकारी ना हो कर दिमाग से शिकारी बना। मनुष्य केवल अस्त्र-शस्त्र की मदद से ही शिकारी बन पाया। जबकि खेती बागवानी, मनुष्य के शारीरिक क्षमता के अनुरूप कार्य है। मनुष्य ने माँसाहार के लिए भी शिकार नहीं बल्कि पालन की विधि का उपयोग किया है।

एक सवाल यह उठता है की अगर मनुष्य का पाचन तंत्र शाकाहार के अनुरूप बना है तो फिर मनुष्य माँसाहार क्यों करता है? क्या माँसाहारी मनुष्य के पाचन

तंत्र शाकाहारी मनुष्य की तुलना में कुछ अलग तरह से विकसित होते हैं? इन सवालों का जवाब ऐसे समझा जा सकता है की मनुष्य के पाचन तंत्र में उसके भोजन के अनुरूप कुछ बदलाव होते हैं।

मनुष्य की आँतों के अंदर मौजूद असंख्य सूक्ष्म जीव, जो भोजन को पचाने का काम करते हैं, वो माँसाहारी मनुष्य के अंदर शाकाहारी मनुष्य की तुलना में अलग होते हैं। साथ ही माँसाहार भोजन मुख्यतः मनुष्य के परिपेक्ष का परिणाम है। कुछ जलवायु परिस्थितियाँ ऐसी हैं जहाँ अनाज, सब्जी या फल की पैदावार संभव नहीं है। वहाँ मनुष्य ने माँसाहार को ग्रहण किया।

जिस जलवायु में शाकाहार उपलब्ध नहीं हो सकता या जो बहुत ठंडे या गर्म इलाके हैं, माँसाहार मुख्यतः उन्हीं परिस्थितियों में मनुष्य का आहार बना। परंतु जैसे-जैसे संचार और यात्रा के संसाधन बढ़े वैसे वैसे मनुष्य की खाने पीने की आदतें भी एक समाज और परिपेक्ष्य से निकल कर सारे विश्व में फैल गयीं।

क्या मनुष्य को माँसाहार पूरी तरह से निषेध है? शायद इसका जवाब उस समय और उस परिपेक्ष्य में निहित है। अगर मनुष्य को शाकाहार भोजन उपलब्ध नहीं है और भोजन की निरंतरता निश्चित नहीं है तो मनुष्य को माँसाहार से निषेध नहीं सोचना चाहिए। परंतु माँसाहार को जिद्दा स्वाद हेतु, सामाजिक व्यवस्था या नए विकल्प के रूप में स्वीकार नहीं करना चाहिए।

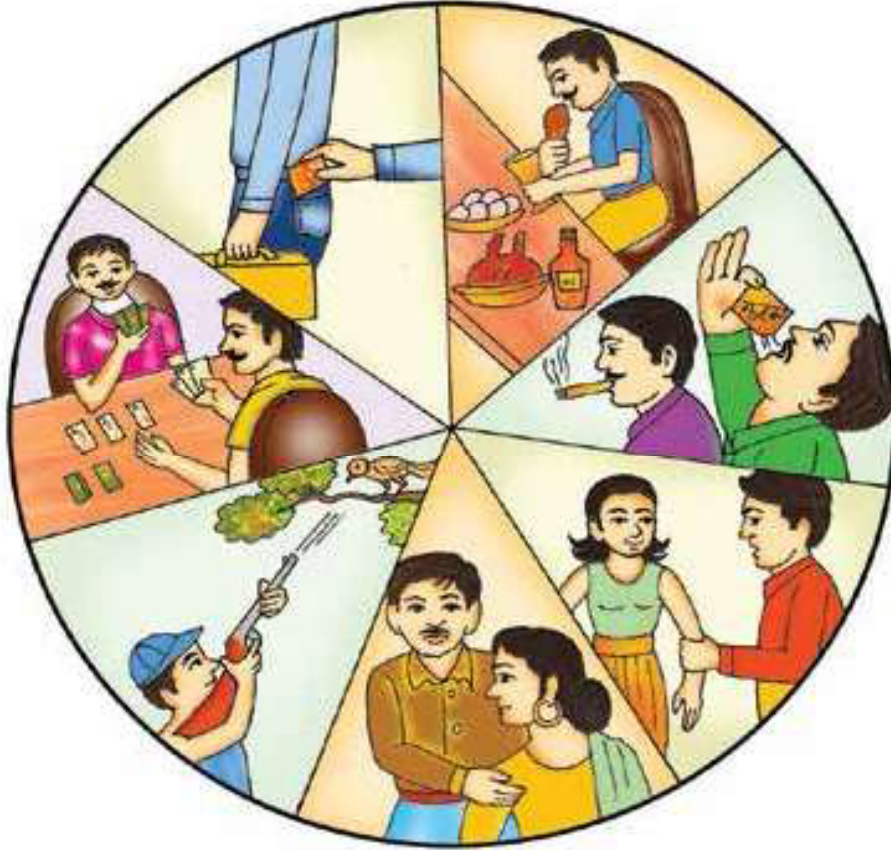
शाकाहार भोजन माँसाहार से ज़्यादा पौष्टिक, ज़्यादा स्वादिष्ट, ज़्यादा प्रयोगात्मक और ज़्यादा स्वस्थ चुनाव है। शाकाहार भोजन में जितने विकल्प मौजूद हैं उतने माँसाहार में नहीं हैं। शाकाहार में सभी 6 स्वाद संभव हैं परंतु माँसाहार में इतने स्वाद निहित नहीं हैं। माँसाहार को खाने पकाने के लिए भी शाकाहार से बहुत कम विकल्प हैं।

शाकाहार भोजन पर्यावरण की दृष्टि से भी माँसाहार भोजन की अपेक्षा कहीं ज़्यादा पर्यावरण अनुकूल है। माँसाहार भोजन को तैयार करने में शाकाहार भोजन की तुलना में कहीं ज़्यादा पानी, प्राकृतिक संसाधनों का इस्तेमाल और कार्बन उत्सर्जन होता है। आज जब हम पृथ्वी के भविष्य के लिए पर्यावरण की चिंता कर रहे हैं, ऐसे में शाकाहार एक ज़्यादा बेहतर विकल्प है।

शाकाहार एक बेहतर जीवन शैली, पर्यावरण हितैषी एवं एक ज़्यादा स्वस्थ भोजन विकल्प है। शाकाहार को सिर्फ धार्मिक दृष्टि से ना देख कर, उसके फायदे नुकसान के दृष्टिकोण से देखने पर यह ज्ञान होता है कि शाकाहार एक सर्वोत्तम आहार है और ये ही कारण है कि पारम्परिक रूप से माँसाहारी समाजों में भी शाकाहार का प्रचलन बहुत बढ़ा है।



## सात कुव्यसन



जीवन को दुःख एवं दुर्गति में ले जाने वाली खोटी आदतें (Bad Habits) कुव्यसन कहलाती हैं। मुख्य रूप से ये सात हैं:—

**1. माँस:**— यह जीवित प्राणी को मारकर प्राप्त होता है। पशु को मारने वाला कसाई और खाने वाले राक्षस कहलाता है। माँसाहार तामसी भोजन है। सब धर्मों ने इसकी निन्दा की है। यह करोड़ों ही रोगकारक जीवाणुओं (Bacteria) का घर है। इसके सेवन से कैंसर, हृदयरोग, मस्तिष्काघात, पथरी, अस्थिक्षय, मधुमेह, गठिया आदि रोग जन्म लेते हैं। माँसाहार के कारण विश्व में भुखमरी, जलाभाव, वन-विनाश, वन्य-प्राणि-विनाश, भूमि-क्षरण, वायु-प्रदुषण और ब्रह्माण्ड के तापमान में वृद्धि की समस्याएं उत्पन्न होती हैं। धर्मग्रन्थों के अनुसार माँसाहारी व्यक्ति मरकर नरक गति में जाता है।

**2. मद्य:**— शराब, तमाखू, पान मसाला, सिग्रेट आदि सब नशे इसी में सम्मिलित हैं। ये ऐसे दीर्घकालिक प्राणहारी रोग हैं, जो जीवन-भर आदमी का पीछा नहीं छोड़ते। विश्व में शराब पर प्रति वर्ष 100 अरब डालर से भी अधिक (\$1=₹74)



खर्च होते हैं। इसके सेवन से शरीर का पाचन-तन्त्र और स्नायु-प्रणाली खराब हो जाती है। कई बार जहरीली शराब पीने से हजारों लोगों की जानें चली जाती हैं। डॉक्टरों के अनुसार एक बार के मदिरा-पान से 25 मिनट आयु कम हो जाती है। विश्व में 50 प्रतिशत हत्या, 40 प्रतिशत हमले, 35 प्रतिशत बलात्कार और 30 प्रतिशत आत्महत्या का कारण शराब है। शराब पीकर गाड़ी चलाने से प्रतिदिन हजारों वाहन दुर्घटना-ग्रस्त होते हैं। यह मनुष्य के शारीरिक, मानसिक, नैतिक, आर्थिक और आध्यात्मिक पतन का कारण बनती है।

**3. वेश्या-गमन:**— वेश्या को चुड़ैल कहा है, जो सारे घर को खा जाती है। वेश्या के कोठे पर जाने से घर का और यौवन का नाश होता है। मद्य-माँस आदि के कुव्यसन लगते हैं। बी.डी., एड्स आदि रोग लग जाते हैं। धार्मिक व्यक्ति को होटलों में जाकर कैबरे, डांस आदि भी नहीं देखना चाहिए।

**4. परनारी-गमन:** (Extra Merital Relation)— किसी कवि ने कहा है:—

पर नारी पैनी छुरी तीन ठौर से खाय।  
धन छीजे, यौवन घटे, मरे नरक ले जाए ॥

परनारी-सेवन से घरों में अशांति, पति-पत्नी में परस्पर अविश्वास एवं दाम्पत्य सम्बन्ध टूटने तक की नौबत आ जाती है। अनेक रोग जन्म लेते हैं और बड़े-बड़े परिवार नष्ट हो जाते हैं। रावण, दुर्योधन आदि के उदाहरण हमारे सामने हैं।

**5. शिकार:**— शस्त्र, गुल्लक आदि से पशु-पक्षियों को मारना, अंग-भंग करना, क्रीड़ा-कौतुक के लिए परेशान करना, उनका हिंसक युद्ध कराना शिकार है।

जीव-जन्तुओं को मारने के लिए दवा छिड़काना, स्प्रे करना, भिड़-ततैया-मधुमक्खी के छत्तों पर पत्थर फेंकना/आग लगाना भी इसी में सम्मिलित है।

**6. जुआ:**— ताश, चौपड़, शतरंज, क्रिकेट, फुटबाल, वीडियो गेम आदि के माध्यम से धन लगाकर खेल खेलना, सट्टा करना, लॉटरी, ड्रॉ के टिकटों को खरीदना व उनका धन्धा करना, चुनावों या खेलों की हार-जीत पर पैसा लगाना इसके अन्तर्गत है। इससे धन की बर्बादी, मानसिक-शांति का ह्रास और घर का विनाश हो जाता है। कोई जुआरी आज तक चैन से नहीं सो पाया है। महाभारत में पाँचों पाण्डव तथा राजा नल जूए में अपना सर्वस्व लुटा बैठे थे।

**7. चोरी:**— संध आदि लगाकर, जेब आदि काटकर, रास्ते में लूटकर या किसी और उपाय से बलपूर्वक किसी का धन-हरण करना। चोरी से राजदण्ड, प्राणहरण, हत्याकाण्ड तक के प्रसंग हो जाते हैं। यह अतिनिन्दनीय कर्म है।



## भगवान पार्श्वनाथ का जीवन परिचय



भगवान पार्श्वनाथ जैन शासन के **23वें तीर्थंकर** थे। उनका जन्म **ईसा पूर्व 877** में वाराणसी में हुआ। उनके पिता का नाम अश्वसेन व माता का नाम वामा देवी था। **कुशस्थल** नगरी के राजा प्रसेनजित् की कन्या **प्रभावती** से उनका विवाह हुआ। ईसा

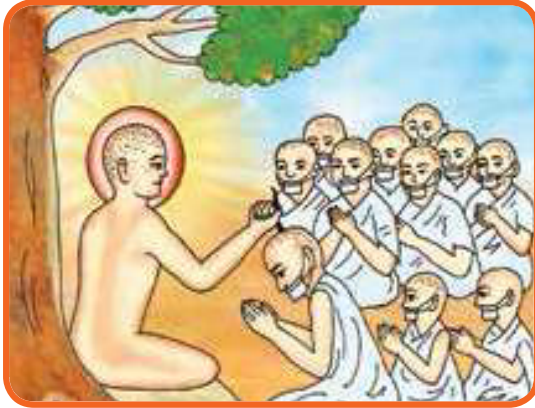
पूर्व नौवी शताब्दी के लगभग भारतवर्ष के कोन-कोने में हठयोग का बोलबाला था। धर्म के नाम पर दंभ की गहरी छाप लग चुकी थी। लोग वास्तविक धर्म को छोड़कर बाहरी दिखावे में बह चुके थे। उन्हीं दिनों की बात है, वाराणसी नगरी (बनारस) के बाहर बगीचे में एक साधु यज्ञ कर रहा था। राजकुमार पार्श्वनाथ भी टहलते हुए वहाँ आ पहुँचे। वहाँ पर उस विशाल यज्ञ के दर्शनार्थ एक बड़ी भीड़ जमा हो रही थी। राजकुमार ने अपने विशिष्ट ज्ञान (अवधि ज्ञान) से देखा कि धाय-धाय जलते हुए लक्कड़ों में से एक लक्कड़ की पोल में साँप का एक जोड़ा (युगल) तिलमिला रहा है। राजकुमार ने जनता और उस तपस्वी को सावधान करते हुए कहा, 'ऐसी अज्ञान-क्रिया को तिलांजलि दे दो। भला, यह भी कोई धर्म-क्रिया है, जिसमें साँप जल रहे हों?' यह सुनते ही वह साधु चौंका और राजकुमार की बात पर बिगड़ गया। राजकुमार के आदेश से सेवकों ने उस लक्कड़ को फाड़ा, तो उसमें झुलसा हुआ साँप का जोड़ा निकला। राजकुमार ने सर्प-सर्पिणी को नमस्कार मन्त्र सुनाया और समभाव रखने का उपदेश दिया। उन्होंने राजकुमार के उपदेश को शिरोधार्य कर पूर्ण शान्ति व समता से प्राणों को त्याग दिया। दोनों मरकर **धरणेन्द्र और पद्मावती** नामक देव व देवी बने। सारे लोग राजकुमार की प्रशंसा करते हुए अपने घर लौट आए। साधु मन ही मन राजकुमार पर कुढ़ा, पर उसकी एक भी नहीं चली। लोगों की भी इस तरह के अज्ञानपूर्ण क्रिया-काण्डों से आस्था हट गई। वह साधु अपनी आयु पूर्ण करके '**कमठ**' नामक देवता बना। कुछ समय बाद 30 वर्ष की आयु में राजकुमार ने अपने पिता और माता की अनुमति पाकर दीक्षा ग्रहण की।

एक बार वे अहिच्छत्र वन में ध्यानस्थ खड़े थे। उधर से पूर्व जन्म का द्वेषी वही 'कमठ' देव जा रहा था। इन्हें देखते ही उसका वैर जागृत हो गया। उसने ध्यानस्थ



भगवान को अनेक उपसर्ग (कष्ट) दिए। उन पर ओलों की वर्षा की, परन्तु वे ध्यान से विचलित नहीं हुए। तब उसने क्रोध में आकर मुसलाधार वर्षा की, परन्तु वे फिर भी ध्यान से विचलित नहीं हुए। आकाश में दिल दहलाने वाली मेघ-गर्जना होने लगी। कुछ ही क्षणों में चारों ओर पानी ही पानी हो गया। भगवान पार्श्व पानी में डूबने लगे। पानी गले तक आ गया। उधर नाग-नागिन धरणेन्द्र-पद्मावती ने अवधि ज्ञान से देखा कि हमारे उपकारी भगवान पार्श्व को कोई दुष्ट देव उपसर्ग दे रहा है। तत्काल दोनों नीचे आये और उन पर सर्प-फण की छाया करके उनका उपसर्ग शांत किया। **कुल 83 दिन** की कठोर साधना के उपरांत प्रभु पार्श्व को केवल ज्ञान प्राप्त हुआ। लगभग **70 वर्ष** तक प्रभु ने जन-कल्याणार्थ विहार और धर्म-प्रचार किया। उनके धर्म-संघ में **16,000 साधु, 38,000 साध्वियाँ, 1,64,000 श्रावक तथा 3,27,000 श्राविकाएँ थीं**। पूर्ण 100 वर्ष की आयु में उनका निर्वाण हुआ। उनकी स्तुति में अनेकों मन्त्र तथा चमत्कारी स्तोत्र रचे गए, जिनमें 'कल्याण मन्दिर' व 'उपसर्ग-हर-स्तोत्र' अति प्रसिद्ध हैं। सब प्रकार की चिंताओं का हरण करने के कारण प्रभु पार्श्व को 'चिंतामणि पार्श्वनाथ' भी कहा जाता है।

## भ. महावीर के 11 गणधर



**24वें तीर्थंकर** श्रमण भगवान महावीर स्वामी जी के कुल 14,000 शिष्य थे। उनकी सर्वविध आचार-व्यवस्था संभालने वाले 11 प्रमुख सन्त 'गणधर' कहलाते थे। महावीर प्रभु को वैशाख शुदी दसवीं को केवल ज्ञान हुआ। अगले दिन एकादशी तिथि को मध्यमपावा नगरी में समवसरण की रचना हुई। ये सभी विद्वान उस नगरी में सोमिल ब्राह्मण के यज्ञ में आमन्त्रित थे। सभी अपूर्व मेधा, प्रज्ञा और शास्त्र-ज्ञान के भण्डार थे। भगवान महावीर की दिव्य ऋद्धि से आकर्षित होकर यज्ञ-मण्डप छोड़कर उनके श्रीचरणों में पहुंचे और दीक्षित हुए। उस समय इनके साथ **4400 शिष्य** थे। वे भी साथ ही दीक्षित हुए।

11 गणधरों के नाम इस प्रकार हैं:—

1. इन्द्रभूति जी, 2. अग्निभूति जी, 3. वायुभूति जी, 4. व्यक्त स्वामी जी, 5. सुधर्मा स्वामी जी, 6. मण्डितपुत्र जी, 7. मौर्यपुत्र जी, 8. अकंपित जी, 9. अचलाभ्राता जी, 10. मेतार्य स्वामी जी, 11. प्रभास स्वामी जी।



## इतिहास के झरोखे से



**1. सम्राट चन्द्रगुप्त:** ये वीर निर्वाण की दूसरी शताब्दी में (ईसा से लगभग 325 वर्ष पूर्व) भारतवर्ष के अतितेजस्वी सम्राट् हुए। इन्होंने विद्वान ब्राह्मण चाणक्य के निर्देशन में अत्याचारी नन्द वंश को उखाड़ कर मौर्यवंश की स्थापना की। ई. पू. 305 में यूनान नरेश सैल्यूकस ने भारत पर आक्रमण किया। तब सम्राट् ने उसे युद्ध में करारी मात दी और काबुल, कान्धार तक के प्रदेशों को यूनानी दासता से मुक्त कराकर अपना साम्राज्य स्थापित किया। ज्ञात इतिहास में भारतवर्ष में आज तक इतना बड़ा सम्राट् अन्य कोई नहीं हुआ।

इतिहास की बिखरी कड़ियों के जोड़ने से आज ये सिद्ध हो चुका है कि चन्द्रगुप्त एक जैन राजा थे। उनके गुरु चाणक्य भी जैन धर्म-सिद्धान्तों पर दृढ़ आस्था रखते थे। वीर-शासन के पाँचवें आचार्य भद्रबाहु के साथ चन्द्रगुप्त की अनेक वार्ताएं व घटनाएं मिलती हैं। एक बार उनको रात्रि में 17 स्वप्न आए, जिनका विश्लेषण आचार्य भद्रबाहु ने किया। उल्लेखों से यह प्रमाणित होता है कि 25 वर्ष शासन करने के बाद चन्द्रगुप्त ने अपने पुत्र बिन्दुसार को राज्य सौंपकर स्वयं जैन मुनि की दीक्षा ली और श्री श्रवणबेलगोला तीर्थ पर संथारापूर्वक शरीर-त्याग किया।

**2. आशाशाह और पन्नाधाय:** आशाशाह मेवाड़ (राजस्थान) के एक साहसी जैन युवक थे। ये कुम्भलनेर दुर्ग के दुर्गपाल पद पर नियुक्त थे। उस समय महाराणा रन्तसिंह की मृत्यु के बाद दासीपुत्र बनवीर ने उत्तराधिकारी विक्रमाजीत को मारकर सिंहासन पर अधिकार कर लिया। विक्रमाजीत का लघुभ्राता उदय सिंह अभी शिशु था। बनवीर उसे भी मारना चाहता था। तब राज-परिवार की एक सेविका पन्नाधाय, जो एक जैन श्राविका थी, ने अपने पुत्र का बलिदान देकर उदयसिंह की प्राण-रक्षा की। शिशु उदय को लेकर पन्नाधाय चित्तौड़ से निकल गई। उसने अनेक सामन्त-सरदारों के पास जाकर उदय सिंह को शरण देने की याचना की। मृत्यु-भय से कोई भी तैयार नहीं हुआ। तब वह आशाशाह के पास पहुंची। पहले-पहल वे भी झिझके। तब उनकी माँ एकदम कटार निकाल कर उन पर झपटी कि ऐसे कायर पुत्र से तो मैं निपूती ही भली थी।



इससे आशाशाह को उत्साह मिला। उन्होंने उदय को गोद में लेकर प्रण किया कि मैं प्राण देकर भी मेवाड़ के इस शिशु की रक्षा करूँगा। आशाशाह ने उदय सिंह को अपना 'भतीजा' प्रचारित कर पालन किया। समय आने पर उदय सिंह चित्तौड़ के राज-सिंहासन पर आसीन हुआ।

**3. भामांशाह:** मेवाड़ (राजस्थान) के विख्यात योद्धा भामांशाह ओसवाल जैन थे (जन्म 27.1.1547, निधन 28.1.1640)। ये महाराणा प्रताप के मन्त्री भी थे और अन्तरंग सखा भी। इन्होंने जैन होते हुए भी, मातृभूमि के गौरव की रक्षा-हेतु, हल्दीघाटी के युद्ध में अपनी तलवार के अद्भुत जौहर दिखाए। महाराणा उस युद्ध में हार कर वनों में भाग गए थे। न उनके पास सेना बची थी, न धन। वे अपने बच्चों को घास की रोटी खिलाने पर मजबूर हो गए थे। एक समय ऐसा भी आया, जब वे अपनी राजपूती आन-बान को गिरवी रखकर बादशाह अकबर से सन्धि करने को तैयार हो गए थे। तभी वीर भामांशाह उनके चरणों में पहुंचे और अपनी सारी सम्पत्ति उनके चरणों में अर्पित कर दी। भामांशाह के दिए धन के बल पर महाराणा की 25,000 सेना का 12 वर्ष के लिए निर्वाह चला। इससे सेना में एक नवीन उत्साह का संचार हुआ और अन्ततः मुलगसेना को मेवाड़ से खदेड़ दिया गया।

**4. दीवान अमर चन्द जैन:** ये जयपुर नरेश के विशेष कृपापात्र थे। बड़े ही सत्य निष्ठ, मधुरता और करुणा आदि गुणों से ओतप्रोत। एक बार राजा ने वन से एक शेर को पकड़ा। दरबारियों से पूछा कि कौन इस शेर के लिए माँस आदि का प्रबन्ध करेगा? इस पर दीवान जी ने कहा, 'महाराज, क्या यह अनिवार्य है कि शेर को माँस ही खिलाया जाए?' राजा ने व्यंग्य किया, 'तो क्या आप शेर को जलेबियां खिलाएंगे?' दीवान ने विश्वासपूर्वक कहा, 'क्यों नहीं महाराज! आप यदि आज्ञा दें, तो मैं शेर को जलेबियां भी खिला सकता हूँ।'

राजा ने शेर को दीवान जी के अधिकार में सौंप दिया। वे तीन दिन तक शेर के पिंजरे में जलेबियों के थाल भिजवाते रहे, पर शेर ने उनको नहीं खाया। चौथे दिन दीवान जी स्वयं जलेबियों का थाल लेकर शेर के पिंजरे में गए और निवेदन किया, 'वनराज, ये जलेबियां हैं। इनको खाकर अपनी भूख शान्त करो, अन्यथा मैं प्रस्तुत हूँ, मुझे खा डालो।' कहते हैं, शेर एक बार तो गुराया, पर फिर जलेबी खा ली। यह था एक अहिंसक की अहिंसा का चमत्कार!

**5. आचार्य हीर विजय सूरि (1528-1597 ई.):** ये जैन धर्म-शासन के विशेष प्रभावक आचार्य हुए। बादशाह अकबर के दरबार में उनको विशेष सम्मान प्राप्त था। जब कभी वे दरबार में पधारते, तब बादशाह सिंहासन से खड़े होकर उनका स्वागत करते थे। आचार्य श्री के उपदेश से प्रभावित होकर बादशाह ने न केवल माँसाहार का सेवन काफी कम कर दिया, अपितु जैन पर्व 'पर्यूषण' के आठ दिनों में पशुवध और शिकार पर प्रतिबन्ध लगाने का फरमान भी जारी किया।

